विवेकानंद से बड़ी प्रेरणा ज़्या हो सकती है। वह केवल उपदेश देने वाले नहीं रहे। उन्होंने आइडिया को आइडियालिज्म में परिवर्तित किया। आज से करीब 120 साल पहले इस महापुरूष ने रामकृष्ण मिशन को जन्म दिया। उन्होंने संस्था की नींव कैसे मजबूत बनाई होगी, जो आज भी उतनी ही ताकत से खड़ी है।

मेरा सौभाग्य रहा है कि उस महान परंपरा में कुछ पल आचमन लेने का अवसर मिला। जब विवेकानंद जी के भाषण की शताज़्दी थी, उस दिन मुझे शिकागो जाने का सौभाग्य मिला था। उस सभागार में जाने का अवसर मिला था और उस शताज़्दी समारोह में मुझे शामिल होने का सौभाग्य मिला था।

मैं उस विश्वभाव को महसूस करता हूं। ज़्या कभी दुनिया में किसी ने सोचा है कि किसी भाषण की वर्षगांठ भी मनाई जाती है। हम इसे इसलिए मनाते हैं, ज़्योंकि सवा सौ साल के बाद भी उस समय कहे गए शज़्द आज भी जीवित हैं। वह हमें जागृत करने का सामर्थ्य रखते हैं। सभागार में वंदे मातरम् सुनकर भारत के प्रति भज़्ति का भाव जागता है। मैं पूरे हिंदुस्तान से पूछता हूं ज़्या हमें वंदे मातरम् कहने का हक है? भारत में वंदे मातरम् कहने का पहला हक सफाई करने वालों को है, ज़्योंकि हम भारत मां पर जो कूड़ा डालते हैं, वह उसे साफ करते हैं। गंगा के प्रति हमारे मन में बहुत श्रद्धा है, लेकिन उसे साफ रखने में ज़्या हम सहयोग करते हैं। यदि विवेकानंदजी होते तो ज़्या वह ये सब सहन कर लेते। हम सफाई भले न करें, लेकिन गंदगी करने का हक हमें नहीं है। मुझे याद है एक बार मैंने बोला था कि पहले शौचालय फिर देवालय। उस समय बहुत खराब प्रतिक्रिया हुई थी। लेकिन आज मुझे खुशी है कि देश में ऐसी बेटियां हैं जो शौचालय नहीं, तो शादी नहीं करेंगी ऐसा तय कर लिया। हम समयानुकुल परिवर्तनकारी लोग हैं। हमारे अंदर की शज़्ति हमारी बुराईयों के खिलाफ लड़ाई लड़ने का नेतृत्व करती है। स्वामी विवेकानंद जी का जब हम स्मरण करते हैं तब शज़्दों का भंडार नहीं था। वो एक तपस्वी की वाणी थी। वरना हिन्दुस्तान की पहचान सांप-सपेरों तथा जादू-टोना वाले देश की थी। एकादशी को ज़्या खाना है और पूर्णिमा को ज़्या नहीं खाना है, हमारे देश की यही पहचान थी। विवेकानंद ने दुनिया के सामने कह दिया था ज़्या खाना है, ज़्या नहीं खाना यह मेरे देश की संस्कृति परंपरा नहीं है, वो तो हमारी व्यवस्थाओं का हिस्सा है। हमारी सांस्कृतिक व्यवस्था अलग है।

सदियों की तपस्या से निकली हुई चीजों ने इस देश के हर व्यक्ति ने इसके अंदर कुछ- कुछ जोड़ा ही है। स्वामी विवेकानंद जी की सफलता का मूल आधार था उनके भीतर का आत्म सज़्मान और आत्म गौरव का भाव। जब मैं मेक इन इंडिया कहता हूं तो इसका विरोध भी होता है। लेकिन जिन्हें यह बात पता है कि स्वामी विवेकानंद जी और जमशेदजी टाटा के बीच ज़्या संवाद हुआ,जिन्हें दोनों के बीच का पत्र व्यवहार पता है वह इसका विरोध नहीं करते। कारण, उस समय 30 साल के नौजवान ने टाटा से कहा था कि वे भारत में उद्योग लगाएं। टाटा ने लिखा है कि स्वामी विवेकानंद की वह बातें मेरे लिए प्रेरणादायक रही हैं। उसी कारण मैं भारत के अंदर उद्योगों को बनाने के लिए गया। आप यह जानकर हैरान हो जाएंगे कि भारत में पहली कृषि क्रांति स्वामी विवेदानंदजी के विचारों से उपजी थी। डा. सेन जिन्हें कृषि का परिवर्तनकाल लाने का मुखिया माना जाता है, उन्होंने जो पहली कृषि संस्थान बनाई वह विवेकानंद के नाम पर रखी गई। मतलब, हिन्दुस्तान में कृषि को आधुनिक बनाना चाहिए, वैज्ञानिक रिसर्च से बनाना चाहिए इस सोच की बातें विवेकानंद जी उस उम्र में करते थे। हमारे देश में कौशल विकास नया विषय नहीं है। लेकिन पहले ये विषय बिखरा पड़ा था। हमने आकर इसे एक जगह लाया। अलग मंत्रालय बनाया। मेरा मानना है कि देश के नौजवान को काम पैदा करने वाला बनना चाहिए। देश के नौजवान को मांगने वाला नहीं देने वाला बनना चाहिए। इसलिए स्वामी विवेकानंद को याद किया जाता है, ज़्योंकि उन्होंने तब इनोवेशन की बात की थी। हमें अपने अंदर के फेल होने के भय को बाहर निकालना होगा। दुनिया में ऐसा कोई इंसान नहीं है, जो फेल हुए बिना कुछ हासिल कर पाया हो। नदी के किनारे खड़ा व्यज़्ति डूबता नहीं है, लेकिन कुछ सीख भी नहीं पाता। सीखता वही है जो पानी में छलांग लगाता है। वह डूबता भी है और तैरना भी सीखता है। किनारे खड़े होकर लहरें गिनकर जीवन काटने वाला सफल नहीं होता, सफल वो होता है जो लहरों को पारकर आगे बढ़ता है। भारत सरकार स्टार्ट अप इंडिया और स्टैंड अप इंडिया का अभियान चला रही है। मैं चाहता हूं कि देश का नौजवान नया इनोवेशन करे। नए प्रोडज़्ट